अंजोरिया

भोजपुरी के इण्टरनेट पत्रिका

भादो अंजोरिया 2060 विक्रमी / सितम्बर 2003 ईस्वी साल:1 अंक:2

एह अंक में :

भोजपुरी कविता में वियोग	भगवती प्रसाद द्विवेदी	2
नेम प्लेट	माला वर्मा	4
अँखिया के पुतरी	डा0 बृजेन्द्र सिंह बैरागी	5
भूख	राम लखन विद्यार्थी	5
कजरी	त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम'	7

आलेख

भोजपुरी कविता में वियोग

भगवती प्रसाद द्विवेदी

'वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान' के मुताबिक कविता रचेवाला पहिलका कवि वियोगी रहल होइहन आ उन्हुकरा आंतर के बेसम्हार पीर के आह-कराह से कविता के जनम भइल होई। ओइसहूं, साहित्य में जवन कुछ शाश्वत बा, अमर बा, ओकर अधिकतर हिस्सा करूने से लबालब भरल बा। सांच पूछल जाउ त आमजन के जिनिगी के कथा दुःखे आ वियोग-बिछोह से सउनाइल बा आ रचनिहार किछु आप बीती, किछु जगबीती से घवाहिल होके अंतर्मन के पीर के बानी देला। तबे उ मरम के छूवेवाली रचना बनेले आ अपना गहिर-गझिन संवेदना से पढ़निहार-सुननिहार पर आपन अमिट छाप छोड़ेलें। चाहे हीर-रांझा होखसु, लैला-मजनूं हो खसु भा सोहनी महिवाल - कठकरेजी समाज एह लोग के कबो मिलन ना होखे दिहल, बाकिर एह चरित्रन के अमर परेम आ वियोग-बिछोह के दिल दहलावे वाली कथा जन-जन के जबान पर आजुओ बा।

भोजपुरिया समाज अपना बल-बूता पर जांगर ठेठा के बहुत किछु हासिल करेवाला समाज रहल बा। रोजी-रोटी के जोगाड़ में आम तौर पर मरद लोग बहरवांसू हो जात रहे आ घर-परिवार, गांव-जवार आ पत्नी-प्रेमिका के वियोग ताजिनिगी झेले खातिर अलचार रहे। कमोबेस इहे हाल आजुओ बा आ नगर-महानगरन में छिछियात भोजपुरिया दुःख-तकलीफ आ बिछोह के अपना आंतर में दबवले जीवटता के जियतार नमूना पेश करि रहल बाड़न।

भोजपुरी के लोकगीतन में त वियोग-बिछोह के अइसन मार्मिक, हृदयस्पर्शी चित्र उकेराइल बा कि सुननिहार के करेजा फाटे लागेला आ आंख से लोर के नदी बहे लागेले। ई वियोग खाली मरद मेहरारू आ प्रेमी प्रेमिका के बिछुड़ले भर सीमित नइखे। एकर फइलाव कबो ससुरा जात बेटी के वियोग का रूप में बियाहगीत में त कबो दुनिया जहान से नाता तूरत परिजन के बिछोह का रूप में मउवत गीतो में मिली। भोजपुरी के आदिकवि कबीर अपना निरगुनिया बानी में जीव आ आतमा के बिछोह के रेघरियावे वाला चित्र उकेरले बानीं। महेन्दर मिसिर के पूरबी में आंवक में ना आवेवाला वियोग के दरद के बखूबी महसूसल जा सकेला। बारहमासा में त हर ऋतु के मौसमी सुघरता का संगे बिरह में बेयाकुल नायिका के मनोदशा के तस्वीर आंतर के तीर-अस बेधे बेगर ना रहि सके। हर जगहा इहे भाव- 'पिया के वियोगवा में कुहुके करेजवा'। चाहे फागुन के फगुवा होखे, चइत के चइता होखे भा सावन के कजरी -- अगर साजन-सजनी के साथ ना होखे त सुहावन मउसम के भकसावन लागत देरी ना लागे। तबे नू विरहिनी के आंख से लोर, मघा नछत्तर के बरखा मे ओरियानी के पानी अस टपकेला। महाकवि जायसी लिखले बानी :

बरिसे मघा झकोरि-झकोरि
मोर दुइ नैन चुअत जस ओरी।

राम सकल पाठक 'द्विजराम' रचित 'सुन्दरी-विलाप' के सुन्दरी के विलाप पथलो दिल इंसान के पघिलावे के ताकत राखत बा :

गवना कराइ सैंया घरे बइठवले से,
अपने गइले परदेस रे बिदेसिया।
चढ़ली जवनिया बैरिन भइली हमरी से,
केई मोरा हरिहें कलेस रे बिदेसिया।
अमकि के चढ़ीं रामा अपना अटरिया से,
चारू ओर चितईं चिहाइ रे बिदेसिया।
कतहूं ना देखीं रामा सैंया के सुरतिया से,
जियरा गइल मुरझाइ रे बिदेसिया।

लोक जिनिगी के कुशल चितेरा भिखारी ठाकुर के अमरकृति 'बिदेसिया' त बिदेसी आ सुन्दरी के विरहे-वियोग के केन्द्र में राखिके रचल गइल बा। जब बिदेसी अचके में परदेस चलि जात बाड़न, त सुन्दरी भाव-विह्वल होके

कहत बाड़ी :

पियवा गइलन कलकातवा ए सजनी !
तरि दिहलन पति-पत्नी नातवा ए सजनी,
किरिन-भीतरे परातवा ए सजनी!

विरहिनी बेचारी जल बिन मछली नियर तड़पत बाड़ी। आखिर हमरा जरी मे के आरी भिड़ा देले बा? रोज आठो पहर बाट जोहे के सिलसिला का कबो खतम होई?

बीतत बाटे आठ पहरिया हो डहरिया जोहत ना।
धोती पटधरिया धइके, कान्हवा प चदरिया हो,
बबरिया झारिके ना।
होइब कवना शहरिया हो
बबरिया झारि के ना।
केइ हमरा जरिया में भिरवले बाटे अरिया हो, चकरिया दरिके ना।
दुख में होत बा जतसरिया हो,
चकरिया दरिके ना।
परोसिकर थरिया, दाल-भात-तरकरिया हो, लहरिया उठे ना,
रहित करित जेवनरिया हो, लहरिया उठे ना।

आधुनिक भोजपुरी कवितो में एह पक्ष के मर्मातक पीर का संगे रचनाकार लोग उठावत आइल बा। अपना घर में रहेवाली अकेल मेहरारू आ टोल-परोस के मरदन के भुखाइल बाघ-अस नजर। दिन भर त काम-धाम में लवसान होके कटियो जाला, बाकिर पहाड़-अस रात काटल मुश्किल होला। आचार्य पाण्डेय कपिल के शब्दन में :

कइसे मनवा के बतिया बताईं सखी,
हाल आपन कहां ले सुनाईं सखी।
दिन त कट जाला दुनिया के जंजाल में,
रात कइसे अकेले बिताईं सखी।

सावन के रिमझिम फुहार, झींसी आ हरियरी, उहवें परदेसी बालम के वियोग। डा० रिपुसूदन श्रीवास्तव के एगो गीत में विरही मन में पइसल हूक के अन्दाज लगावल जा सकेला :

असो आइल फेरू सावन के बहार सजनी,
जब से परे लागल रिमझिम फुहार सजनी!
ठाढ़ दुआरी राधा भींजे, कान्हा घर नाआइल,
उमड़ि-घुमड़ि घन शोर मचावे,
हिय में हूक समाइल
बिजुरी धरे लागल जरला पर अंगार सजनी।
टप-टप-टप-टप मड़ई चूवे,
नींद भइल बैरिनिया,
बलमा गइल विदेस छोड़िके,
कलो बारी धनियां
नइया परल बाटे बीचे मंझधार सजनी।

आज काल्ह जब बाजारवाद नेह नाता के मिठास लीलत जा रहल बा, जिनिगी कतना अकसरुवा, दुख-पीर के पर्याय बनल जा रहल बिया। बेसम्हार भीड़ो का बीच कई कई गो मोरचा पर लड़त-भीड़त, पछाड़ खात आ टूटत जात बिरही मन। शिवकुमार 'पराग' के कहनाम बा :

आह-वाह जिनिगी में बा,
धूप-छांह जिनिगी में बा।
सूनत करेजा फाटेला,
उ कराह जिनिगी में बा।

जब चारू ओर जुलुमी जन के ताण्डव होई त जिनिगी पहाड़े नू बनि के रहि जाई। कविवर जगदीश ओझा 'सुन्दर' के पाती देखी :

कुकुर भइले जुल्मी जन, हाड़ भइल जिनिगी
नदी भइल नैना, पहाड़ भइल जिनिगी।

अभाव आ विरह के बाथा-कथा प्रभुनाथ मिश्र बयान कइले बानीं :

सनन-सनन जब बहेले बेयरिया
टटिया के ओटवो उड़ावेले चुनरिया
कांपि जाले पतई से पाटल पलान रे
बदरा के देखि-देखि बिहरे परान रे!

धनिया लाख चाहत बाड़ी, बाकिर होरी के सुधि बिसरते नइखे। पिया के मिठकी नजरिया पर दीठि-कनखी मारत डा० अशोक द्विवेदी कहत बाड़न :

अंगना-बंड़ेरिया प कगवो ना उचरे

पिया तोर मिठकी नजरिया ना बिसरे।
डाढ़ि-डाढ़ि फुदुकेले रूखी अस दिन भर
मन के चएन नाहीं देले कबो छिन भर
सुधिया तोहार मोरा हियरा के कुतरे।

आखिरकार परदेसी के पाती पाके धनिया क हुलास-उछाह के पारावार नइखे। अनन्त प्रसाद 'राम भरोसे' के पाती भरपूर भरोसा दियावत बिया :

चिट्ठी में लिखले बाड़न कि
फगुआ ले हम आइब।
तब तक ले पगार पर जाइब,
बोनस भी पा जाइब।
चिन्ता के कुल्हि छंटल बदरिया,
चिट्ठी आइ गइल बा।
मन उड़िके जा पहुंचल झरिया,
चिट्ठी आइ गइल बा।

कुल्हि मिला के भोजपुरी कविता में वियोग के जवन चित्र उकेरल गइल बा, उ बड़ा जियतार बा आ ओह मे 'मउसम का मिजाज का संगे नारी-मन के सोच, आकुलता, तड़प आ अभाव ग्रस्त बेबसी के हर दृष्टि से मन के छूवे वाला चित्रण भइल बा, जवन भोजपुरी काव्य के उठान आउर ताकत के परिचायक बा।

भगवती प्रसाद द्विवेदी
द्वारा, प्रधान महाप्रबन्धक, दूरसंचार जिला, पोस्ट बाक्स 115, पटना-800001 -बिहार

लघु कथा

नेम प्लेट

माला वर्मा

'बाबू जी, अब रउआ वृद्धाश्रम में जाके रहे के पड़ी। एइजा केहू के एतना फुरसत नइखे जे रउआ से बतकूचन करे आ सेवा टहल में आपन समय बरबाद करे। बेमतलब रउआ चक्कर में हमनी के दिमाग बंटल रहेला।'

'ना बेटा.... हमरा के ओइजा मत भेज। आगे से हम तनिकों शिकायत ना करब। जब तहरा लोग के फुरसत मिली तबहीं खेयाल रखीह। ई मकान बनावे में हमार जीवन भर के कमाई लाग गइल। अब बुढ़ापा में ई घर छोड़ के कहां जाईं ? अइसे भी बबुआ, ई घर पर पहिला हक हमरे बनेला....बाद में तहरा लोग के।'

'खूब कहनी बाबूजी, पिछला हिस्सा स्वर्गीया माई के नाम, बांया हिस्सा छोटकू के नाम। अब बताईं....... राउर हिस्सा कहां बचत बा..?

'का कहत बाड़ बबुआ, घर के प्रवेश द्वार पर हमार नाम के तख्ती नइखे लउकत? ऐकर मतलबे बा कि पूरा घर हमार ह..।'

'एक बीता काठ के टुकड़ा पर ऐतना गुमान..! ऐकरा पर राउर नाम के चार अक्षर, उहो धुंधला गइल बा। ऐकरे बलबूते कहतानी कि हमार घर ह..? लीं ऐकर मियाद अभीए पूरा कर देत बानीं। ना काठ के टुकड़ा रही ना राउर दावा..।'

छन भर में नेम प्लेट कई टुकड़ा में गिर के जमीन पर बिखर गईल। पुरान लकड़ी के बिसाते केतना !

माला वर्मा, हाजीनगर, प.बंगाल-743135 001

कविता

अँखिया के पुतरी

डा0 बृजेन्द्र सिंह बैरागी

बेटी हो दुलारी बारी, कइसे बिआह करीं ?
ई दानव दहेज कहँवाँ कब कइसन रूप धरी।
अदिमी के रूपवा में दानव दहेज देख...
दया धरम, तियाग, क्षमा से परहेज देख...
लीलें चाहे धियवन के ईहो रोज घरी-घरी।
बेटी हो दुलारी बारी....।

एही भ्रष्टासुरवा के राज बा समाज में
बहुरूपिया ई बोलेला बढ़ी के समाज में
सोना चांदी धन दउलत से ना पेट भरी।
बेटी हो दुलारी बारी...।

सोचि-सोचि डर लागे कांपे हो करेजवा
लीली जाला तनिके में दानव दहेजवा
एकरे बा राज, के समाज के सुधार करी।
बेटी हो दुलारी बारी...।

पोसि पालि बहुते जतन से सेयान कइनी
शक्ति रूप जानिके हम धीरज धियाज धइनी
बेटी तूं त हउ हमरो अंखिया के पुतली।
बेटी हो दुलारी बारी...।

सोचिले सुनर वर से बिआह कई दीहींतीं
भलहीं हो बिकाइ बरबाद होई जईतीं
बाकी स्टोपवा अउर गैसवा के का करीं।
बेटी हो दुलारी बारी...।

डा0 बृजेन्द्र सिंह बैरागी
आदर्श नगर, सागरपाली, बलिया - 277506

लघु कथा

भूख

राम लखन विद्यार्थी

मरद-मेहरारु आपन मारूति कार से जेवर बेसाहे सोनारी बाजार पहुचलन। जवन सर्राफ के दोकान में जाये के रहे, आहे दोकान से चार डेग एनही कार रूक गइल, कारन कि दोकान के सामने बहत मोरी से एगो अधेड़ अउरत कादो निकाल-निकाल के आपन तगाड़ी में र खत रहे। मरद कार के हार्न बजावत रहलन आ उ अउरत अपना धुन में कादो काढ़ते रहल। अनकसा के मरद कार से मुड़ी निकाल के डंटलन-''रे.. तोरा सुनात नइखे का रे.?'

'सुनात बा..।' अउरत कार का ओर मुंह फेर के कहलसि।

'त फेर हटत काहे नइखीस। एह कादो में तोर का भुलाईल बा, जे परेशान बाड़ीस..।'

'हम आपन भूख खोजत बानी बाबू।' अउरत कातर स्वर में कहलसि।

एही बीचे दोकान के सेठ उहां आ गइलन। 'का बात-बात बा श्रीमान ?' सेठ पूछलन।

'लागता ई अउरत पागल हीय। कहतीया हम कादो में आपन भूख जोहत बानीं।'

सेठ मुस्काइल, कहलस-'श्रीमान जी ई अउरत पागल ना हिय। जे कहतीया बिलकुल ठीक कहतीया।'

सेठ के बात सुन के मरद अचरज में पड़ गइल। कहलस ''तू हू त उहे कह देल।'

'देखीं सरकार, हमनी के दोकान में सोना चानी के काम होला। सोना-चांदी तरसत खा उहन के छोट-छोट कन दोकान में जेने-तेने छितरा जाला। सबेरे दोकान बहराला आ बहारू मोरी में गिरा दीहल जाला। ओही सोना-चांदी के कन खातिर ई कादो निकालत बिया। पानी से कादो साफ करी तब सोना-चानी के कन

खरिया जाई। फेरु ओही कन के हमनी के दोकान मे बेंच दीही। सौ-पचास एकरा भेंटा जाई।'

मरद चिहाइल- 'हाय रे भूख !'

तबले उ अउरत कादो भरल तगाड़ी के कपार पर उठा के पानी गिरत नल का ओर चल दिहलस।

मरद आपन कार सर्राफ के दोकान पर ला के लगा दिहलन। मरद-मेहरारु कार से निकल के जेवर बेसाहे सर्राफ के दोकान में ढुक गईलन।

राम लखन विद्यार्थी
साहित्य सदन, पानी टंकी, काली स्थान,
डिहरी-ऑन सोन, रोहतास

गीत

कजरी

त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम'

झुर-झुर बहे बयार,
बवरिया अँचरा उड़ि-उड़ि जाला ना।

उड़े चुनरिया अंगिया झलके,
फरके चढ़त जवानी, रामा,
पानी-पानी ऋतु मस्तानी,
निरखि उमिरि के पानी,
अरे रामा, हंसे नयन के कजरा,
बदरा झरि-झरि जाला ना।
झुर-झुर बहे बयार,
बवरिया अँचरा उड़ि-उड़ि जाला ना।

इरिखा भईल, सुरूज गरमइले,
होते सांझि जुड़इले, रामा,
छिपल चनरमा जाइ अन्हारा,
करिखा मुहें पोतइले,
अरे रामा झुक-झुक झांके तरई,
सुरति सहल न जाला ना।
झुर-झुर बहे बयार,
बवरिया अँचरा उड़ि-उड़ि जाला ना।

होते भोर, कुमुद मुसुकइली,
चढ़ते दिन कुम्हिलइली, रामा
कांच कली खिलला से पहिले,
लाल-पियर होइ गइली,
अरे रामा, लता लटकि रहि गइली,
उपर चढ़ल न जाला ना।।
झुर-झुर बहे बयार,
बवरिया अँचरा उड़ि-उड़ि जाला ना।

चढ़ल झमकि सावन, मनभावन,
पतई पीटे ताली, रामा
थिरकि उठल बन मोर ताल पर,
झूमे डाली-डाली
अरे रामा बजल बीन बंसवरिया,
कजरी रोज सुनाला ना।।
झुर-झुर बहे बयार,
बवरिया अँचरा उड़ि-उड़ि जाला ना।

खुलल केस, लट बिखरन लागे,
लहर-लहर लहराये, रामा
विस के मातलि जइसे नागिन,
बार-बार बलखाये,
अरे रामा सुधि उमड़ल, प्रियतम ठिग,
मनवा उड़ि-उड़ि जाला ना।।
झुर-झुर बहे बयार,
बवरिया अँचरा उड़ि-उड़ि जाला ना।

त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम'
शारदा सदन, कृष्णा नगर, बलिया- 277001